षाष्ठ अध्याय

'युगे-युगे क्रांति' नाटक की भाषाशैली तथा उद्देश्य

षष्ठ अध्याय

' युगे युगे क्रांति ' नाटक की भाषाशैली तथा उद्देश्य --

उपन्यास की तरह नाटक में ढीली-ढाली भाषा के लिए गुंजाईश नहीं होती । इसमें नाटककार को भाषा के प्रति अधिक सतर्क रहना पडता है । सुरेशचंद्र शुक्ल के शब्दों में -- " नाटयकृति के शिल्प का एक बहुत महत्वपूर्ण उपकरण है उसकी भाषा । नाटयकृति में भाषा का सर्वथा अभिनव प्रयोग होता है । नाटक की भाषा में एक ओर काव्य जैसी गहन लाक्षणिकता, सूक्ष्म चित्रात्मकता तथा दूसरी ओर बोलचाल की भाषा की मूर्तता, प्रवाह एवं सरलता अपेक्षित है । भाषा में पात्रानुकूल, वैविध्य, लचीलापन, शक्ति एवं वैशिष्टय की अनिवार्यता निरंतर बनी रहती है । श्रेष्ठ नाटक की भाषा-भाव, विचार और चरित्रों के साथ बोलचाल की भाषा से भी अधिक दूर नहीं हो सकती । भाषा के दर्शकगत पक्ष के कारण ही भाषा को समय के अनुसार एक नया संस्कार मिलता है । भाषा किसी जाति अथवा मानव समुदाय की आत्मभिव्यक्ति एवं परस्पर अनुभव संप्रेषण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सपत्ति उसकी संपूर्ण परंपरा संचित होती है क्योंकि यह ऐसा माध्यम है जिसमें काल की निरंतरता है । नाटक का अध्ययन और मूल्याकन बहुत अंशोतक भाषा की क्षमता और व्यंजना शक्ति पर निर्भर करता है ।" [१]

' युगे - युगे क्रांति' नाटक को भाषा की दृष्टि से देखा जाए तो इसमें विविधता एवं विभिन्नता दिखायी देती है । सुरेशचंद्र जी के मतानुसार यह नाटक सभी गुणों से परिपूर्ण है ।

---

१ सुरेशचंद्र शुक्ल - आधुनिक हिन्दी नाटक - पृ.१३५ ।

यह नाटक पाँच पीढियों को लेकर चित्रित हुआ है और इसी कारण हर पीढी का काल अलग अलग है। और यही वजह है कि भाषा में विविधता तथा विभिन्नता आयी है।

' युगे - युगे क्रांति' नाटक की भाषा इतनी प्रभावी है कि नाटकीय प्रवाह न तो कही शिथिल पडता है और न कहीं उलझता, रुकता-सा प्रतीत होता है। नाटक के आरंभ होने के साथ ही हम नाटकीय कार्य व्यापारों और पात्रों के साथ-साथ बढते चले जाते हैं। प्रस्तुत रचना में पहलुओं का यथार्थ उद्घाटन और आधारभूत भावना का निखार चरित्रों के कार्यव्यापारों और घटनाचक्रों के तादात्म्य द्वारा क्रमिक रूप से होता गया है।

' युगे-युगे क्रांति' नाटक की भाषा प्रवाही, सजीव होने के साथ-साथ नाटककार के उद्देश्य को स्पष्ट करने में सफल है।

सूत्रधार के शब्दों में --

" ये सब अपने को क्रांतिकारी कहते हैं। लेकिन अपने पुरखों की दृष्टि में ये संस्कृति और सभ्यता के शत्रु हैं और दिशा - भ्रष्ट हैं।" [१]

सन १८७५ से आज तक की पाँच पीढियों का यहाँ सजीव चित्रण हुआ है इस कारण हर पीढी के लोगों की भाषा में अलग अलग भाषा का प्रयोग दिखायी देता है।

६.१ <u>चरित्र को उद्घाटित करनेवाली भाषा</u> --

रामकली और कल्याणसिंह सन १८७५ के काल का प्रतिनिधित्व करते हैं इसी कारण रामकली के मुँह में उसके चरित्र को उद्घाटित करनेवाली भाषा का प्रयोग दिखायी देता है --

" रामकली - हाय दया, कैसी बातें करते हो। जरा धीरे-धीरे बोलो। दीवारों के भी कान होते हैं।" [२]

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.११-१२।
२ वही पृ.१४।

उस जमाने की स्त्री का धीरे बोलना ही एक सभ्यता - सा लगता था, इतने धीरे कि आपस की बात किसी तीसरे आदमी तक न पहुँचे ।

लेकिन जमाना बदल जाता है सन १९२० आता है । गाँधीयुग शुरु हो जाता है और इस जमाने की स्त्री तो जोर-जोर से नारे लगाती है । वह जोर से बोलना कोई असभ्यता नहीं मानती । इसी कारण तो वह घर की चार दीवारें लाँधकर समाज में खुले मुँह ही घूमती है । इतनाही नहीं तो उसके सिर का पल्ला भी खिसककर कन्धे पर आ गया है । प्रस्तुत नाटक की शारदा जोर - जोर से भाषण देती हुई कहती है --

" ..... बहिनों हमने निश्चय किया है कि पुरुषों के साथ-साथ हम भी पिकेटिंग करेंगी, विदेशी कपडों की होली जलाएँगी, विद्यार्थियों को सरकारी स्कूलों में नहीं जाने देगी वकीलों को कचहरी जाने से रोकेंगी । आज हम थोडी दिखाई देती हैं लेकिन यदि मेरी आवाज घर की दीवारों को फादकर अत:पुरचारिणी मेरी माँओं और बहनों तक पहुँचती है, तो मैं उनसे प्रार्थना करूँगी कि वे अपने को पहचाने । वे शक्ति हैं, और शक्ति के मार्ग में घर की चार दीवारीं तो क्या हिमालय जैसे नागाधिराज भी बाधा नहीं दे सकते ।" [१]

इस तरह वह अपनी आवाज और ऊँची करने में कोई गैर काम नहीं मानती ।

६.२ तीव्रता और तेजस्विता से युक्त भाषा -

नाटक में पाँच पीढियों दिखाई हैं । हर पीढी के लोग अपने-अपने जमाने में क्रांति करते हैं और इसी कारण उनके मुँह से बाहर निकलनेवाली भाषा में तीव्रता और तेजस्विता है जिसके कारण उस व्यक्ति की अमिट छाप अपने मनपर पडती है ।

सन १९०१ के काल का प्रतिनिधित्व करनेवाला प्यारेलाल विधवा-विवाह का महत्व बताते हुए जोर से बोलता है तब उसकी भाषा में तीव्र स्वर निकलते हैं जैसे --

" पुरुष को एक से अधिक शादी करने का अधिकार है तो नारी ने ही कौनसा

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.३८ ।

अपराध किया है। पुरूष एक स्त्री के जीते-जी दूसरी स्त्री ला सकता है लेकिन नारी मरी जवानी में और जवानी में हो क्यो बचपन में ही पति के मर जाने पर दूसरी शादी नहीं कर सकती उसने अपने पति को आँख उठाकर देखा तक नहीं। छोटी-सी नादान उम्र में ही वह विधवा हो गई है। वह यह भी नहीं जानती कि जिन्दगी किस चिड़िया का नाम है। लेकिन यह बर्बर समाज उसे दूसरा विवाह करने का अधिकार नहीं देता।[१]" उसी तरह सन १९२० के काल का प्रतिनिधित्व करनेवाली शारदा की भाषा में तीव्रता है। स्वयं शारदा के वक्तव्य देखिए --

" भगवान की कृपा से हमें अपने हौसले दिखाने का अच्छा अवसर मिला है। गाँधीजी ने देश की आजादी के लिए असहयोग आंदोलन करने का ऐलान किया है। उन्होंने कहा है कि इस युध्द में नारी को भी पुरूष के कन्धे से कन्धा भिड़ाकर भाग लेने का अधिकार है। किसी समय राजपूत लड़ने के लिए युध्द में जाते थे और उनकी नारियाँ उनके हार जाने पर सती होकर जल जाती थी। आखिर वे भी मरती ही तो थीं। मैं कहती हूँ कि घर के अंदर बैठकर मरने से यह बेहतर है कि हम भी पुरूषों की तरह कष्टों का सामना करें और तब यदि मौत आए तो हँसते हँसते उसे गले से लगा ले। प्राचीन इतिहास में ऐसे उदाहरण मिलते हैं जब पत्नियाँ पतियों के साथ रथ में बैठकर युध्द करती थी।"[२]

शारदा का ही एक और वक्तव्य जिससे उसके स्वभाव की तीव्रता दिखाई देती है --

" यह सारी स्त्री जाति के लिए चुनौती है। मैं निश्चय ही जेल जाऊँगी। इसमें सफलता नहीं मिली तो आत्महत्या कर लूँगी। लेकिन उस दमघोंटू वातावरण में फिर नहीं लौटूँगी।"[२]

सन १९४२ में स्वयं की शादी के लिए स्वयं लड़की देखकर कोर्ट में शादी करनेवाले प्रदीप की बहन है सुरेखा। उसकी भाषा में भी तीव्रता दिखाई देती है। उसी तरह प्रदीप की भाषा में भी तीव्रता है। जैसे --

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.३७।
२ वही पृ.४९।

• नाम बदल जाने से गुण और दोष नहीं बदल जाते । बदल सकते तो आज हर बुरी चीज के अच्छे नाम रख दिए जाते ।• [१]

सुरेखा की भाषा में भी तीव्रता है । जैसे --

• मनुष्य मनुष्य है । धर्म, मत और जाति बदल जाने से वह नहीं बदल जाता । कुल, जाति और समाज के भय से शुध्दि का ढोंग करना मनुष्य और मनुष्यता का घोरतम अपमान है ।• [२]

६.३ प्यार भरी भाषा --

नाटक में नाटककार ने जिस तरह तीव्र तथा तेज भाषा का प्रयोग किया है, उसी तरह प्यार भरी भाषा का भी प्रयोग किया है और वह अनावश्यक नहीं लगती । इसी कारण ही कथावस्तु में रोचकता आती है और वातावरण हलका हो जाता है ।

कल्याणसिंह (प्यार से) अपनी पत्नी से कहता है --

• सच कहता हूँ जब-जब मैं तुम्हें छुता हूँ तो ऐसा लगता है जैसे तुम बहुत खुबसूरत हो मैं उस खूब-सूरती को अपनी आँखों से सूरज की रोशनी में अच्छी तरह देखना चाहता हूँ ।• [३]

शारदा और विमल में बातें होती हैं उन्हीं बातों में भी प्यार भरा स्वर निकल आता है --

• विमल ... मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि कोई हिन्दू लड़की इस तरह बातें कर सकती है । मुँह से ये बातें सुनकर क्यों बताऊ कैसा-कैसा लगता है । ओह, तुम कितनी साहसी हो ।.... अब तुम जान गई, मैं क्यों तुम्हें अपनी बनाना चाहता हूँ, इसी कारण ।

शारदा -- (शरारत से) केवल इसी कारण ?

विमल -- तुम्हारी आँखें बड़ी सुन्दर है क्या नही हैं ।• [४]

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.५८-५९ ।
२ वही पृ.६३ ।
३ वही पृ.१६ ।
४ वही पृ.४८ ।

कल्याणसिंह - रामकली तथा विमल - शारदा की बातों में हमें प्यार भरी भाषा दिखायी देती है।

६.४ जीवन का कटुसत्य बताने वाली भाषा --

आज आधुनिक युग का नेतृत्व करनेवाले अनिरुध्द की भाषा मुँहफट लगती है फिर भी वह इस संसार में भरा हुआ कटुसत्य उसकी भाषा से दिखाई देता है। उसी तरह उसकी भाषा में बेपर्वाही दिखाई देती है। जैसे --

• अनिरुध्द -- सब कुछ होता है। लेकिन वह स्थिर नहीं होता बदलता रहता है।.. .. जिसे तुम भलाई कहती हो वहीं तुम्हारा स्वार्थ है। तुम सब अपनी ही दृष्टि से देखना, सुनना और करना चाहती हो। तुम चाहती हो कि वहीं मूल्य समाज में मान्य हो जिसको तुमने जिया है।• [१]

• पिताजी सिध्दांत के नाम पर दल बदलते हैं। बेटा प्रेम के नामपर संगिनी बदलता है।• [२]

• विवाह हमारे समाज में मात्र एक परंपरा का पालन है। उसके पीछे जीवन की कोई अनुभूति नहीं रह गई है आप जानते हैं कि अनुभूति के अभाव में परंपराएँ सड जाती हैं। इन सडी गली परंपराओं से चिपके रहने से समाज रोगी ही हो सकता है।• [३]

• स्त्री के लिए पति अनिवार्य नहीं है पुरूष अनिवार्य है।• [४]

• विवाह के मंत्र या मॅजिस्ट्रेट के सर्टिफिकेट से स्त्री पुरूषों के संबंधों में कोई अंतर नहीं पडता और यदि यह आवश्यक भी हो, तो यह काम बुढापे में हो सकता है। क्योंकि तब साथी बदलना संभव नहीं हो। लेकिन जब तक हम युवा है, हमें प्रेम चाहिए। प्रेम करने के लिए सर्टिफिकेट की आवश्यकता नहीं होती प्रेम मुक्ति में है, बंधन में नहीं। विवाह स्त्री की गुलामी का पट्टा है इसलिए बंधन है।•[५]

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.७०-७१।
२ वही पृ.७२।
३ वही पृ.७३।
४ वही पृ.७३।
५ वही पृ.७४-७५।

अनिरुध्द के मुँह की यह भाषा सुनकर ऐसा लगता है कि सचमुच वह जीवन की वास्तवता बता रहा है ।

६.५ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग --

सन १९४२ से स्त्री वर्ग में शिक्षा का प्रसार हुआ और इसी कारण प्रस्तुत रचना में स्त्री के मुँह में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग होने लगा । जैसे --

• शारदा -- हमने निश्चय किया है कि पुरुषों के साथ-साथ हम भी पिकेटिंग करेंगी । विद्यार्थियों को सरकारी स्कूलों में नहीं जाने देंगी ।• १

• जैनेट -- ... क्या बात है डियर तुम इतने परेशान क्यों नजर आ रहे हो ?•२

जैनेट के मुँह में और भी अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग दिखाया है । जैसे --

• अन्विता शादी कर रही है ? माई गॉड ।• ३

फिर जैनेट के मुँह में अंग्रेजी शब्द --

• नो - नो डियर । आपको गलतफहमी हुई है ।• ४

रिता के मुँह में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग --

• अनि डालिंग तुम कहाँ हो ?• ५

• ... यू नाटी बोय । यू आर .....• ६

और एक उदाहरण देखिए --

• रिता - (परेशान होकर) गुड गॉड ।• ७

अन्विता के भाषा में भी अंग्रेजी शब्द हैं । जैसे --

• .... हलो मैया । .... क्या डैडी से फिर वाक्-युध्द हो गया ?•८

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे युगे क्रांति - पृ.३८ ।
२ वही पृ.६७ ।
३ वही पृ.६७ ।
४ वही पृ.६८ ।
५ वही पृ.७१ ।
६ वही पृ.७१ ।
७ वही पृ.७३ ।
८ वही पृ.७६ ।

और एक उदाहरण देखिए --

" ..... बीता हुआ हर क्षण मर जाता है। और जो उसके पीछे भागते हैं वे भी फॅासिल बनकर रह जाते हैं ...." [१]

इस तरह स्त्रियों के मुँह में अँग्रेजी शब्द दिखायी देते हैं।

आज आधुनिक युवकवर्ग में भी अँग्रेजी का प्रयोग ज्यादा दिखायी देता है। अनिरुध्द की भाषा देखिए --

" अनिरुध्द - हलो डैडी। कैसे हैं आप।" [२]

" आई एम सो सॅारी डियर। हाँ, देखो डियर, मीट माई डैडी ऐण्ड ममी। डैडी यट रिता है। .... नेल्सन को उसीने तो अन्विता से ` इण्ट्रोडयूस ` कराया था।" [३]

इस तरह नाटक में एक विशिष्ट काल के बाद ही अँग्रेजी भाषा दिखायी देती है। वह भाषा बोलनेवाले के मुँह में उचित लगती है। और ऐसी भाषा के कारण पात्रों के चरित्र का उद्‌घाटन होता है।

६.६ व्यंग्यात्म भाषा का प्रयोग --

नाटक में व्यग्यात्मक तथा मजाक उडानेवाली भाषा भी दिखाई देती है।

आधुनिक पीढी का प्रतिनिधित्व करनेवाला अनिरुध्द एक के बाद एक ऐसी अनेक लडकियों से नाता जोडता है और थोडे दिन जाने के बाद अपनी नई सहेली का अपने माता-पिता से परिचय कर देता है तब उसकी माँ उसे पूछती है --

" जैनेट - पहले मुझे यह बताओ कि श्यामला का क्या हुआ। पिछले हफ्ते तक तुम उसी के साथ रहते थे।

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.७७-७८।

२ वही पृ.६९।

३ वही पृ.७१।

प्रदीप - (व्यंग्य से) और उससे पहले सुमेधा थी ।[१]

व्यंग्य भाषा का और एक उदाहरण देखिए --

दूसरी नारी ?

चौथा पुरूष ? (एक साथ व्यंग्य से) आपस में संघर्ष करनेवालों,तुम भी प्रतिक्रियावादी हो । परंपराओं के गुलाम,चुके हुए व्यक्ति तुम क्रांति कर ही नहीं सकते । वह अधिकार केवल हमारी पीढी को मिला है ।[२]

इस तरह लेखक ने व्यंग्यभरी भाषा का उपयोग सही वक्त और सही जगह पर किया है ।

६.७ मजाक उडानेवाली भाषा का प्रयोग --

नाटक का कथानक ही दो पीढियों में होनेवाला संघर्ष है । यह संघर्ष दिखाते वक्त प्रभाकर जी ने मजाक उडानेवाली भाषा का भी प्रयोग किया है जिसे सुनते ही दर्शकों के मुँह से निकल जाएगा कि क्या बात है । इसके उदाहरण देखिए --

प्रदीप - शुध्द ,हो जाने से क्या आत्मा ऊँची हो जाएँगी ।

विमल - (तिलमिलाकर) हाँ,हो,जाएगी ।

प्रदीप - अगर इसी तरह आत्मा ऊँची होती है तो जेलों का ठेका क्यो नहीं लेते । वहाँ के सभी के सभी अपराधियों को शुध्द करके आप उनकी आत्माओं को पवित्र बना सकते हैं ।

विमल - (चिढकर) दुष्ट,तू मेरा मजाक उडाता है ।[३]

सचमुच प्रदीप अपनी भाषा से पिता का मजाक उडा रहा है ।

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.७१-७२ ।

२ वही पृ.१०-११ ।

३ वही पृ.६० ।

६.८ मुँहावरों और कहावतों से युक्त भाषा --

नाटककार ने मुँहावरों और कहावतों का प्रयोग नाटक में किया है। मुँहावरों का प्रयोग देखेंगे --

* मैं आपको भी इस में शामिल होने की दावत देता हूँ।* १
* जहर दिया लेकिन उसका बाल भी बांका नहीं हुआ।* २
* मुझे ही बलिदान का बकरा बनाने पर तुले हुए है।*३
* समाज को खोखला करनेवाले एक पाखण्ड का पर्दाफाश किया।* ४
* मेरी नाक कटे।* ५
* मेरे दिल में तो सचमुच हौल उठने लगी है।* ६
* कानों में सई देकर जोर-जोर से चिल्लावा है।* ७
* तूम भी जब खून सवार होता है तो बस ....।८
* यह सब देखकर मेरे रौंगटे खडे हो गए।*९
* अपनी लडकी ने समय का साथ देने का प्रयत्न किया तो वह आग-बबूला हो उठे।*१०
* लोग मुझपर ताने कस रहे है।* ११

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.७।
२ वही पृ.१५।
३ वही पृ.१९।
४ वही पृ.२१।
५ वही पृ.२३।
६ वही पृ.२४।
७ वही पृ.२६।
८ वही पृ.२८।
९ वही पृ.३४।
१० वही पृ.३५।
११ वही पृ.४३।

• दोनों एक-दूसरें को फूटी आँखों नहीं सुहाते ।• [१]

• इधर देखता हूँ तुझपर ही रंग चढता जा रहा है ।• [२]

• अब तुम चैन की बन्सी बजा सकते हो ।• [३]

इन सभी संवादों में मुँहावरों का प्रयोग दिखाई देता है ।

नाटक में कहावतों का प्रयोग --

• यह खूब रही मान न मान मैं तेरा मेहमान ।• [४]

• ठहर प्रतिज्ञा के बच्चे, मैं तुझे बताता हूँ । लातों के भूत बातों से नहीं माना करते ।• [५]

उपर्युक्त संवादों में कहावतों का प्रयोग दिखाई देता है ।

६.९ संस्कृत शब्दों का प्रयोग --

नाटककार ने संस्कृत शब्दों का प्रयोग नाटक में किया है । कलावती और प्यारेलाल जब धार्मिक रीति-रिवाज से शादी करते हैं उस वक्त पंडितजी के मुँह में जो मंत्र हैं वह संस्कृत शब्दों में है । इसके उदाहरण देखते हैं --

• ओं सम जन्त विश्वे देवा: समापो हृदयानि नौ ।
सं मातरिश्वा सं धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ ।।
ओं यदैषि मनजा दूरं दिशो अनुपवमानो वा ।
हिरण्यपर्णो वैकर्ण: सत्वा मन्मनजां करोतु असौ ।।• [६]

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.५२ ।
२ वही पृ.६२ ।
३ वही पृ.८५ ।
४ वही पृ.७ ।
५ वही पृ.२७ ।
६ वही ३१-३२ ।

इसके और उदाहरण देखते हैं --

- पृष्ठभूमि में एक ` गलियारा ` है । [१]
- अगर ` पूर्वाभ्यास ` ठीक नहीं होगा । [२]
- यह तुम्हारा मिथ्या दंभ है । [३]
- छि: छि: जो असूर्यपश्याएँ थी । [४]
- हम क्षत्रियों में भी शीर्षस्थ । [५]
- पिता का ही नवीन संस्करण होता है । [६]
- क्या और कोई विकल्प नहीं ? [७]
- पाखण्डी लोग इस तरह बाधा देते है । [८]

उपर्युक्त सारे उदाहरण संस्कृत शब्दों से युक्त दिखायी देते है । इन शब्दों के कारण नाटककार का संस्कृत भाषा का ज्ञान दिखाई देता है ।

६.१० उर्दू शब्दों से युक्त भाषा --

नाटक की भाषा में उर्दू शब्दों का प्रयोग भी दिखाई देता है । जैसे --

- जनाब अब ` तशरीफ ` लाए हैं । [९]
- यह बेशर्मी और बेअदबी है । [१०]
- बड़े-` बुजुर्गों ` के रहते जवान लोग अपनी घरवाली का मुँह देखा नहीं करते । [११]

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.५ ।
२ वही पृ.६ ।
३ वही पृ.९ ।
४ वही पृ.४० ।
५ वही पृ.५९ ।
६ वही पृ.८३ ।
७ वही पृ.७३ ।
८ वही पृ.३३ ।
९ वही पृ.६ ।
१० वही पृ.१४ ।
११ वही पृ. १३ ।

' इतने ' बेसब्र ' मत बनो ।' [१]

' तुम्हारा ' दकियानूसी ' समाज उसे दुराचारिणी समझता है ।' [२]

' यह ' मजमा ' गैर कानूनी है ।' [३]

' ' बाजिद ' होने का अब सवाल नहीं रहा ।' [४]

' अंतर का अहंम उन्हें ' गुमराह ' किए हुए है ।' [५]

' ' ऐलान ' करना होगा ।' [६]

' दिमाग से यह सब ' खुराफत ' निकाल देंगे ।' [७]

' स्वतंत्रता का यह अर्थ तो नहीं है कि वह ' हरजाई ' हो जाए ।' [८]

' ' मजाल ' है ।' [९]

' परंतु उसकी बुध्दि ' बैानी ' ही रह गई थी ।' [१०]

उपर्युक्त सभी वाक्यों में उर्दू शब्द दिखाई देते हैं ।

निष्कर्ष --

इस तरह हम यह कह सकते हैं कि नाटक में वर्णित पाँच पीढियों के कलानुसार तथा पात्रानुसार ही नाटक की भाषा है जो पात्रों के मुँह में उचित लगती है । भाषा का रूप ओजस्वी तथा उदात्त होने के कारण नाटक की शैली

१	विष्णु प्रभाकर - युगे युगे क्रांति -	पृ. १८F
२	वही	पृ.४७ ।
३	वही	पृ.३९ ।
४	वही	पृ.५४ ।
५	वही	पृ.६५ ।
६	वही	पृ.२८ ।
७	वही	पृ.२१ ।
८	वही	पृ.६३ ।
९	वही	पृ.२५ ।
१०	वही	पृ.७२ ।

ढंगदार बन गयी है। भाषा में प्रवाहात्मकता, सजीवता के साथ-साथ व्यंग्यात्मकता तथा मजाक भी है। ' युगे - युगे क्रांति' नाटक की भाषा मनपर अमीट छाप डालती है।

पाँच पीढियों को लेकर यह नाटक घटित हुआ है। हर पीढी का काल अलग है। इस का कारण यह है कि जब अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार हुआ तब पात्रों की भाषा में अंग्रेजी भाषा दिखायी देने लगी। निष्कर्षत: हम कह सकते है कि ' युगे - युगे क्रांति ' नाटक की भाषा ओजस्वी और उदात्त होने के साथ-साथ सहज और सरल भी है। इस के कारण हम पात्रों के चरित्र को जान सकते हैं। भाषा में मुहावरों और कहावतों का भी प्रयोग किया है। अंग्रेजी शब्दों के साथ-साथ संस्कृत और उर्दू शब्दों का भी प्रयोग नाटक में दिखाई देता है। निष्कर्षत: भाषा शैली की दृष्टि से यह एक सफल नाटक है।

६.१० युगे-युगे क्रांति नाटक का उद्देश्य --

प्रत्येक नाट्य-कृति का प्रणायन किसी-न-किसी उद्देश्य, भावना अथवा विचारधारा को दृष्टिगत कर होता है। नाटक एक ओर सामाजिक पक्ष से जुडा हुआ है तथा दूसरी ओर कलाकार की मानसिक सृष्टि से भी। नाटककार सम-सामायिक परिस्थितियों के आलोक में विभिन्न समस्याओंका एक दृष्टि विशेष अध्ययन कर कृति के रूप में प्रतिपादन करता है।

स्वतंत्रता के पश्चात पश्चिम की व्यक्तिवादी चेतना का परिचय भी नाटकों में मिला जो नाटककार के स्वतंत्र चिंतन का परिचायक होते हुए भी आधुनिक दर्शक की माँग थी। आधुनिक जीवन में अभाव, विवशता, संत्रास, व्यक्तित्व का टूटना, समय की गति के समक्ष पंगुल, असहायता, सब आज के व्यक्ति का ही जीव था जिसे नाटककार ने ग्रहण किया।

परंपरा को तोडा जानेपर जीवन जिया जा सकता है। नयापन वास्तव में सार्थक है क्या जीवन-गाडी चल सकती है ? नाटककार ने इन सभी के प्रति एक दर्शक की दृष्टि से देखा है और प्रयास किया है कि उसके मस्तिष्क एवं हृदय का स्पर्श कर सके। टूटते हुए जीवन के बीच समन्वय, संबंधोंकी दरारों को जोड तथा गले-गले को तराशकर फैंक देने की भावना नाटककार की स्वतंत्र दृष्टि का एवं उसके दृष्टिकोण से तोले गए जीवन का सबल प्रमाण है।" [१]

सुरेशचंद्र शुक्ल के कथन के अनुसार इस नाटक में भी नाटककार ने विभिन्न परिस्थितियों के संदर्भ में प्रस्तुत नाटक की वस्तु-योजना की है जो कि उद्देश्य की दृष्टि से सफल है।

युगे - युगे क्रांति यह विष्णु प्रभाकर जी लिखित नाटक एक नया प्रयोग है। नाटककारने निरंतर चलनेवाले दो पीढियों के मूल्यों के संघर्ष के माध्यम से सामाजिक क्रांति की निरंतर प्रक्रिया को स्पष्ट किया है। नाटक में प्रेम एवं पारिवारिक जीवन की अभिव्यक्ति है। अन्यत: यहाँ भी वाद, प्रतिवाद एवं संवाद की प्रक्रिया विद्यमान है। नयी पीढी पुरानी पीढी के मूल्यों को तोडकर नए मूल्यों की स्थापना कर देती है। कल जो पीढी नयी थी वह आनेवाली कल की पीढी के सामने पुरानी पड जाती है।

नाटक का गर्भितार्थ सूत्रधार के निम्नलिखित संवादों से हम जान जाते हैं --

" यह चक्र कभी नहीं रुकता। जो आज क्रांति करने का दावा करते हैं, कल वे ही प्रतिक्रियावादी हो जाते हैं। इतिहास बार-बार अपने को दोहराता है। वे समझाते हैं उन्होंने समय को पकड लिया है लेकिन जादूगर काल उन्हें फांकी देकर न जाने कब आगे बढ जाता है और उसके मंचपर आ जाती है एक नई पीढी जो उसके लिए अजनबी होती है।" [२]

---

१ सुरेश चंद्र शुक्ल - आधुनिक हिन्दी नाटक - पृ.१३६-१३७।

२ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.३४-३५।

सन १८७५ ई.में जीनेवाला कल्याणसिंह कुलरीति के खिलाफ सबके सामने पत्नी का मुख देखकर क्रांतिकारी बन जाता है। लेकिन उसका बेटा प्यारेलाल के समय में (काल है - १९०१ ई.) वह प्रतिक्रियावादी बन जाता है। प्यारेलाल अपने युग की मान्यताओं को तोडकर एक विधवा से ब्याह कर क्रांतिकारी बन जाता हैं। यही क्रांतिकारी प्यारेलाल आगे चलकर अपने मॉ-बाप के समान दकियानूसी बन जाता है। वह विधवा से विवाह तो करता है लेकिन पिता बननेपर स्त्री के प्रति उसके विचार हैं -' नारी की शोभा कोमलता और सुन्दरता है। पौरूष और वाचालता नहीं। स्त्री को चार दीवारों से बाहर आने की अनुमति नहीं दे सकता जब कि सन १९२०-२१ की शारदा भाषण देती है --

" नारी पुरूष से किसी भी बात में पीछे नहीं है। उसके अधिकार समान है, उसके कर्तव्य भी समान हैं। इसलिए मेरी प्यारी बहनों, हमने निश्चय किया है कि पुरूषों के साथ-साथ हम पिकेटिंग करेंगी।"[१] यह शारदा' विमल से विवाह बध्द होकर अपने पिता को परंपरावादी एवं अपने को क्रांतिकारी घोषित करती है। आगे चलकर वह(शारदा और विमल) अपने पुत्र के सामने पुरातणपंथी साबित होता है। (सन १९४२ में) क्योंकि वे नहीं सह सकते कि अपना पुत्र-प्रदीप, जैनेट जैसी परधर्म ईसाई युवती से शादी करे। अपने धर्म की सीमा लॉधकर जैनेट को अपनाने वाला क्रांतिकारी प्रदीप अपनी संतान के सामने सडी-गली परंपरावादि बन जाता है। क्योंकि उसने परधर्म की लडकी से क्यो न हो पर विवाह किया था, लेकिन उनकी संतान विवाह संस्कार को ही नाकार स्वैर-यौवनाचार में विश्वास रखती है।' विवाह' उनके अनुसार यौवनाचार का मात्र एक सर्टिफिकेट है। उनकी नयी मान्यता है - जब तक हम युवा है, हमें प्रेम चाहिए। प्रेम करने के लिए सर्टिफिकेट की आवश्यक्ता नहीं होती। प्रेम मुक्ति में है, बंधन में नहीं। विवाह स्त्री की गुलामी का पट्टा है, इसलिए बंधन है।

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.३७-३८।

इस प्रकार हर नयी मान्यता नए विचार,नये मूल्य समय के गतिमान प्रवाह में पुराने हो जाते हैं और उसका विरोध करने के लिए नयी मान्यता ,नये विचार, नये मूल्य सामने आते हैं यह प्रक्रिया निरंतर है अत: क्रांति तथा संघर्ष भी निरंतर है यह संघर्ष और निरंतर चलती आयी क्रांति को स्पष्ट करना ही नाटककार का उद्देश्य है।

निष्कर्ष --

नयी पीढी और पुरानी पीढी इन दोनों में संघर्ष तो निरंतर चला आया है। दो पीढीं का समय अलग-अलग होने के कारण राजकीय,सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में बदलाव आते हैं और इसी कारण दो पीढी के बर्ताव,खयाल तथा रीति-रिवाजों में भी बदलाव आ जाता है। नयी तथा पुरानी पीढी अपने समय के साथ चलती है, लेकिन अपने आगे जो पीढी निर्माण होती है उसी के साथ चलता हर पुरानी पीढी को अच्छा नहीं लगता। क्योंकि उनके मूल्य अलग होते हैं। यही बात विष्णु प्रभाकर युगे युगे क्रांति नाटक के माध्यम से स्पष्ट करते हैं। विवाह संस्था में आए बदलाव के कारण हर दो पीढी में संघर्ष निर्माण होता है। हर नयी पीढी खुद को क्रांतिकारी समझाती है लेकिन जब वे खुद पुराने होते है तब उनको भी आनेवाली पीढी पुरातन पंथी संबोधित करती है। मूल्य-परिवर्तन के कारण हर दो पीढी में संघर्ष रहता है। इस तरह दो पीढियों के बीच युगो-युगों से चलता आया संघर्ष और क्रांति को स्पष्ट करना नाटककार का प्रथम लक्ष्य रहा है। यह क्रांति युगों-युगों से चली आयी है और आगे भी चलती रहेगी यही बात प्रस्तुत नाटक में चित्रित की है।